पर्वत प्रदेश में पावस (सुमित्रानंदन पंत)

पाठ का परिचय

पर्वत प्रकृति का सबसे अधिक मनोहारी रूप है। संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसका मन पर्वतों पर जाने के लिए न मचलता हो। प्रस्तुत पाठ के माध्यम से कवि पर्वतीय प्रदेश के प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति कराना चाहता है। वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रकृति में पल-पल होने वाले परिवर्तन हृदय को रोमांच से भर देते हैं। इस कविता को पढ़ते हुए यही अनुभूति होती है कि मानो हमारे आस-पास की सभी दीवारें कहीं विलीन हो गई हैं। हम किसी ऐसे स्थान पर आ पहुँचे हैं, जहाँ चारों ओर ऊँचे-ऊँचे पर्वत हैं, झरने बह रहे हैं और हम बादलों के धुएँ से घिरे हैं। प्रकृति के उस मनोरम रूप में हम विलीन हो जाना चाहते हैं।

काव्यांशों का भावार्थ

पर्वत प्रदेश में पावस

1. पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
-जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल!

भावार्थ–पर्वतीय क्षेत्र में वर्षा ऋतु की प्रकृति का वर्णन करते हुए कवि कहता है–पर्वतीय क्षेत्र था और वर्षा ऋतु थी। प्रकृति पल-पल में अपना रूप बदल रही थी। सामने विशाल पर्वतमाला दूर-दूर तक फैली थी। वह धरती की करधनी (तगड़ी) के समान सुशोभित थी। पर्वत पर खिले हज़ारों फूल ऐसे लगते थे, मानो वे उसकी आँखें हैं और वह उन्हें फाड़-फाड़कर अपने सौंदर्य को देख रहा है। पर्वत की तलहटी में एक साफ़-स्वच्छ जल वाला तालाब है, जो दर्पण के समान लग रहा है। उसमें फूलों से युक्त विशालकाय पर्वत का प्रतिबिंब पड़ रहा था, जिससे ऐसा लगता है, मानो पर्वत अपनी फूलोंरूपी आँखों से तालाबरूपी दर्पण में अपने विशाल आकार को निहार रहा हो।

2. गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंतापर।

भावार्थ–कवि कहता है कि मस्ती से नस-नस को उत्तेजित कर देने वाले, मोतियों की लड़ियों जैसे सुंदर झाग भरे झरने पर्वतों से झर रहे हैं। वे ऐसे लगते हैं, मानो अपनी झर-झर की आवाज़ में पर्वत का गौरवगान कर रहे हैं। पर्वत की छाती पर उगे हुए ऊँचे-ऊँचे वृक्ष ऐसे लग रहे हैं, मानो वे पर्वत के हृदय में उठने वाली महत्त्वाकांक्षाएँ हैं। वे वृक्ष शांत आकाश पर टकटकी लगाए, स्थिर खड़े हुए किसी चिंता में मग्न-से दिखाई दे रहे हैं।

3. उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
–यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।

भावार्थ–कवि कहता है कि अचानक बहुत बड़ा बादल पर्वत से ऊपर उठा तो ऐसा लगा, जैसे पर्वत ही अपने बड़े-बड़े पारे जैसे चमकीले पंखों को फड़फड़ाता हुआ उड़ गया हो। ज़ोरदार वर्षा प्रारंभ हो गई। उसमें झरने विलीन हो गए, केवल उनकी आवाज़ ही सुनाई दे रही है। ऐसा लगता है, जैसे आकाश ही धरती पर टूट पड़ा हो। बादलों ने शाल के ऊँचे-ऊँचे वृक्षों को ऊपर तक ढक लिया है, जिन्हें देखकर ऐसा लगता है कि शाल के वे वृक्ष भयभीत होकर धरती में धँस गए हैं। ज़ोरदार वर्षा के कारण तालाब से उठती नमीयुक्त वायु ने कोहरे का रूप ले लिया है, जिसे देखकर ऐसा लगता है, जैसे उसमें आग लग गई हो और उससे धुआँ उठ रहा हो। इस प्रकार उस पर्वत प्रदेश में इंद्रदेवता बादलरूपी यान पर सवार होकर इंद्रजाल का (जादुई खेल) खेल रहे हैं, जिसमें पल-पल में सबकुछ बदलता हुआ दिखाई दे रहा है।

शब्दार्थ

मेखलाकार = करधनी के आकार की पहाड़ की ढाल। **सहस्र** = हज़ार। **दृग-सुमन** = पुष्प रूपी आँखें। **अवलोक** = देखना। **महाकार** = विशाल आकार। **ताल** = तालाब। **दर्पण** = आईना। **मद** = मस्ती। **झाग** = फेन। **उर** = हृदय। **उच्चाकांक्षा** = ऊँचा उठने की कामना। **नीरव नभ** = शांत आकाश। **अनिमेष** = एकटक। **भूधर** = पहाड़। **पारद के पर** = पारे के समान धवल एवं चमकीले पंख। **रव-शेष** = केवल आवाज़ का रह जाना। **सभय** = भय के साथ। **शाल** = एक वृक्ष का नाम। **जलद-यान** = बादलरूपी विमान। **विचर** = घूमना। **इंद्रजाल** = जादूगरी।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) पावस ऋतु थी, पर्वत प्रदेश,
पल-पल परिवर्तित प्रकृति-वेश।
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार-बार
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल
दर्पण-सा फैला है विशाल!

1. **पद्यांश में किस ऋतु का वर्णन किया गया है–**
   (क) शरद ऋतु का (ख) ग्रीष्म ऋतु का
   (ग) वर्षा ऋतु का (घ) वसंत ऋतु का।
2. **पर्वत किस आकार का है–**
   (क) माला के आकार का
   (ख) करधनी के आकार का
   (ग) त्रिशूल के आकार का
   (घ) सूरज के आकार का।
3. **पर्वत के चरणों में स्थित ताल की तुलना किससे की है–**
   (क) सूर्य से (ख) रेगिस्तान से
   (ग) दर्पण से (घ) समुद्र से।
4. **'दृग-सुमन' में कौन-सा अलंकार है–**
   (क) रूपक अलंकार (ख) उपमा अलंकार
   (ग) श्लेष अलंकार (घ) यमक अलंकार।
5. **पर्वत की आँखें कितनी हैं–**
   (क) दो (ख) चार
   (ग) हज़ार (घ) सौ।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग)।

(2) गिरि का गौरव गाकर झर-झर
मद में नस-नस उत्तेजित कर
मोती की लड़ियों-से सुंदर
झरते हैं झाग भरे निर्झर!
गिरिवर के उर से उठ-उठ कर
उच्चाकांक्षाओं से तरुवर
हैं झाँक रहे नीरव नभ पर
अनिमेष, अटल, कुछ चिंता पर।

1. **गिरि का गौरवगान कौन कर रहा है–**
   (क) पत्थर (ख) वृक्ष
   (ग) झरने (घ) नदियाँ।
2. **झरनों की तुलना किससे की गई है–**
   (क) झाग से (ख) दर्पण से
   (ग) दूध से (घ) मोती की लड़ियों से।
3. **पर्वत के हृदय से उठकर वृक्ष किसे देख रहे हैं–**
   (क) तालाब को (ख) झरनों को
   (ग) आकाश को (घ) नदियों को।
4. **वृक्षों की स्थिति कैसी है–**
   (क) वे एकटक देख रहे हैं (ख) वे अटल खड़े हैं
   (ग) वे कुछ चिंतित से हैं (घ) ये सभी।
5. **'मोती की लड़ियों-से सुंदर' में अलंकार है–**
   (क) उपमा (ख) रूपक
   (ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

(3) उड़ गया, अचानक लो, भूधर
फड़का अपार पारद के पर!
रव-शेष रह गए हैं निर्झर!
है टूट पड़ा भू पर अंबर!
धँस गए धरा में सभय शाल!
उठ रहा धुआँ, जल गया ताल!
–यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल। ***(CBSE 2023)***

1. **'भूधर के उड़ जाने' का आशय–**
   (क) उसके पंछी समान उड़ने से है
   (ख) उसके अदृश्य हो जाने से है
   (ग) उसके बादलों के साथ चले जाने से है
   (घ) उसके बादलों के पंख लगाने से है।

2. 'है टूट पड़ा भू पर अंबर'–पंक्ति में क्या कल्पना की गई है–
(क) अंबर ने धरती पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी
(ख) अंबर ने धरती पर मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी
(ग) अंबर ने बादलों रूपी सेना द्वारा भूमि पर आक्रमण कर दिया
(घ) अंबर बादलों की गड़गड़ाहट के साथ धरती पर गिर पड़ा।

3. शाल के वृक्षों के भयभीत होने का कारण इनमें से क्या नहीं है–
(क) आसमान से मूसलाधार वर्षा
(ख) तालाबों का जलना
(ग) चारों तरफ उठता धुआँ
(घ) बादलों की गड़गड़ाहट।

4. प्रस्तुत काव्यांश में किस ऋतु में कहाँ के सौंदर्य का वर्णन किया गया है–
(क) वर्षा ऋतु में मैदानी भागों के सौंदर्य का
(ख) वर्षा ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के सौंदर्य का
(ग) वसंत ऋतु में तटीय प्रदेश के सौंदर्य का
(घ) वसंत ऋतु में पर्वतीय प्रदेश के सौंदर्य का।

5. प्रस्तुत काव्यांश में किसका मानवीकरण किया गया है–
(क) पर्वतों का (ख) अंबर का
(ग) वृक्षों का (घ) प्रकृति का।

उत्तर— 1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ख) 5. (घ)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. 'पर्वत प्रदेश में पावस' के कवि हैं–
(क) सुमित्रानंदन पंत (ख) मैथिलीशरण गुप्त
(ग) जयशंकर प्रसाद (घ) ऋतुराज।

2. सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब हुआ–
(क) 10 मई, 1900 को (ख) 5 मई, 1900 को
(ग) 20 मई, 1900 को (घ) 15 मई, 1900 को।

3. पंत जी की रचना नहीं है–
(क) वीणा (ख) साकेत
(ग) पल्लव (घ) ग्राम्या।

4. जल में अपना महाकार कौन देख रहा है–
(क) हाथी (ख) आकाश
(ग) पर्वत (घ) इनमें से कोई नहीं।

5. उच्च आकांक्षा किसके मन में छिपी है–
(क) बादलों के (ख) पर्वत पर उगे वृक्षों के
(ग) झरनों के (घ) पर्वतों के।

6. बादलों के छा जाने से क्या होता है–
(क) झरने बहने लगते हैं (ख) अंधकार छा जाता है
(ग) मौसम अच्छा लगता है (घ) पर्वत अदृश्य हो जाते हैं।

7. पारद के पर फड़फड़ाकर कौन उड़ गया –
(क) भूधर (ख) मोर
(ग) हंस (घ) बगुला।

8. पल-पल किसका वेश परिवर्तित हो रहा है–
(क) जादूगर का (ख) प्रकृति का
(ग) स्त्री का (घ) बालक का।

9. कवि ने मेखलाकार किसे कहा है–
(क) चंद्रमा को (ख) सूर्य को
(ग) पर्वत को (घ) तालाब को।

10. पर्वत की आँखें किसे कहा गया है–
(क) वृक्षों को (ख) पत्थरों को
(ग) फूलों को (घ) तारों को।

11. इस कविता में किस स्थान का वर्णन है–
(क) खेतों का (ख) नदी किनारे का
(ग) रेगिस्तान का (घ) पर्वत प्रदेश का।

12. पर्वत के चरणों में क्या है–
(क) नदी (ख) झरना
(ग) तालाब (घ) इनमें से कोई नहीं।

13. झरने क्या कर रहे हैं–
(क) बह रहे हैं
(ख) पर्वत की निंदा कर रहे हैं
(ग) पर्वत का गौरवगान कर रहे हैं
(घ) झाग उत्पन्न कर रहे हैं।

14. नीरव नभ पर कौन झाँक रहा है–
(क) पर्वत (ख) वृक्ष
(ग) चंद्रमा (घ) सूर्य।

15. किसके पंख पारद के हैं–
(क) हंस के (ख) मोर के
(ग) पर्वत के (घ) गरुड़ के।

16. भयभीत शाल के वृक्ष कहाँ धँस गए हैं–
(क) कीचड़ में (ख) बरफ़ में
(ग) धरती में (घ) रेत में।

17. झरनों की नस-नस में क्या भरा है–
(क) शांति (ख) मिठास
(ग) उदासी (घ) उत्तेजना।

18. 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में मुख्य अलंकार है–
(क) यमक (ख) श्लेष
(ग) मानवीकरण (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर– 1. (क) 2. (ग) 3. (ख) 4. (ग) 5. (ख) 6. (घ) 7. (क) 8. (ख) 9. (ग) 10. (ग) 11. (घ) 12. (ग) 13. (ग) 14. (ख) 15. (ग) 16. (ग) 17. (घ) 18. (ग)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'मेखलाकार' शब्द का क्या अर्थ है? कवि ने इस शब्द का प्रयोग यहाँ क्यों किया है? *(CBSE 2016)*

उत्तर : 'मेखला' करधनी को कहते हैं, जो कमर पर बाँधने वाला आभूषण है। 'मेखलाकार' का अर्थ है–मेखला के आकार वाला। कवि ने इस शब्द का प्रयोग दूर क्षितिज तक फैली पर्वतमाला के लिए किया है, जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरती दिखाई देती है। वह ऐसी लगती है, जैसे धरती ने अपनी कमर में करधनी को धारण कर रखा है। करधनी के आकार में दूर तक पृथ्वी को घेरने के कारण कवि ने पर्वतमाला के लिए मेखला शब्द का प्रयोग किया है।

प्रश्न 2 : बादलों से पर्वत के छिप जाने पर कवि ने क्या कल्पना की है? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : बादलों से पर्वत के छिप जाने पर कवि कल्पना करता है कि ऐसा लगता है जैसे आकाश धरती पर टूट पड़ा हो; क्योंकि बादल अचानक उठे और मूसलाधार वर्षा होने लगी। वर्षा इतनी ज़ोरदार थी कि उसमें झरने, पेड़ और पर्वत आदि दिखाई नहीं दे रहे हैं, धरती और आकाश एक हो गए हैं।

प्रश्न 3 : पावस ऋतु में प्रकृति में कौन-कौन-से परिवर्तन आते हैं? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2015)*

उत्तर : पावस ऋतु में प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन आते हैं—

(i) प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलने लगती है।

(ii) पर्वत की तलहटी में स्थित तालाब पानी से भर जाते हैं।

(iii) मोती की लड़ियों जैसे झाग भरे सुंदर झरने झरने लगते हैं।

(iv) पर्वतों के ऊपर उमड़ते-घुमड़ते बादल उड़ते हुए पहाड़ों जैसे लगते हैं।

(v) तालाबों से उठती जल-वाष्प धुआँ जैसी लगती है।

(vi) शाल के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष भी बादलों से ढक जाते हैं।

(vii) मूसलाधार वर्षा होने लगती है।

प्रश्न 4 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का केंद्रीयभाव लगभग बीस शब्दों में लिखिए।

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता पर्वत प्रदेश में वर्षा ऋतु के चित्रण को केंद्र में रखकर रची गई है। इसमें कवि ने वर्षाकाल में पर्वतीय क्षेत्र की सुंदरता और वहाँ की पल-पल बदलती प्रकृति का सजीव चित्रण किया है।

प्रश्न 5 : वर्षा ऋतु में इंद्र की जादूगरी के दो उदाहरण दीजिए।

उत्तर : इंद्र को वर्षा का देवता माना जाता है। कवि ने उसे एक जादूगर माना है। उसकी जादूगरी के दो उदाहरण निम्नलिखित हैं—

(i) बड़े-बड़े बादल ऐसे उमड़ रहे हैं, मानो पर्वत पंख लगाकर उड़ रहे हैं। उन्होंने घनघोर वर्षा करके सबकुछ ढक लिया है। ऐसा लगता है कि आकाश धरती पर टूट पड़ा हो।

(ii) इंद्र की अन्य जादूगरी यह है कि शाल के पेड़ धरती में धँसे हुए दिखाई दे रहे हैं। तालाब से धुआँ-सा उठने लगा है। ऐसा लगता है जैसे तालाब में आग लग गई है।

प्रश्न 6 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर झरनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

अथवा **झरनों की तुलना किससे की गई है? वे किसका गौरवगान कर रहे हैं?**

उत्तर : झरने सफ़ेद झाग से भरे हैं। वे मोतियों की लड़ियों के समान सुंदर हैं। उनकी नस-नस में मस्ती भरी है और वे अपनी झर-झर की आवाज़ में पर्वत का गौरवगान कर रहे हैं।

प्रश्न 7 : 'है टूट पड़ा भू पर अंबर।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**—इस मुहावरेदार कथन के द्वारा कवि पर्वत क्षेत्र में होने वाली मूसलाधार वर्षा का यथार्थ वर्णन करना चाहता है। इसका भाव यह है कि पर्वतों पर उमड़ते बादलों से अचानक ही इतनी ज़ोरदार वर्षा होने लगती है जैसे आकाश धरती पर टूट पड़ा हो। तेज़ वर्षा और घने बादलों से सबकुछ ढक जाता है। पर्वतों पर बादल इतने नीचे होते हैं कि धरती भी आकाश जैसी लगने लगती है।

प्रश्न 8 : कवि ने तालाब की समानता किसके साथ दिखाई है और क्यों?

उत्तर : कवि ने तालाब की समानता स्वच्छ दर्पण के साथ दिखाई है। पर्वत का प्रतिबिंब तालाब में ऐसे दिखाई दे रहा है, जैसे दर्पण में प्रतिबिंब दिखाई देता है। इसीलिए कवि ने उसकी समानता दर्पण से की है।

प्रश्न 9 : पावस किसे कहते हैं? प्रस्तुत कविता में 'पावस ऋतु' किसे गया है?

उत्तर : 'पावस' वर्षा को कहते हैं। 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में 'पावस ऋतु' वर्षा ऋतु को कहा गया है।

प्रश्न 10 : –यों जलद-यान में विचर-विचर
था इंद्र खेलता इंद्रजाल।–भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : **भाव**—इन पंक्तियों के माध्यम से कवि वर्षा ऋतु के कारण प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के विषय में बताना चाहता है। इनका भाव यह है कि बादल इधर से उधर उड़ते प्रतीत हो रहे हैं। कभी वे मूसलाधार वर्षा करने लगते हैं, कभी वृक्षों को ढक लेते हैं, कभी उनके कारण तालाब से धुआँ उठता प्रतीत होने लगता है। कभी अचानक आसमान एकदम साफ़ हो जाता है। पल-पल में प्रकृति में ऐसे परिवर्तन हो रहे हैं, मानो इंद्र देवता बादलरूपी यान पर सवार होकर जादू का खेल दिखा रहे हैं।

प्रश्न 11 : शाल के वृक्ष भयभीत होकर धरती में क्यों धँस गए? *(CBSE 2015)*

उत्तर : पर्वतों की सतह पर धुंध छाई है, जिसमें से झाँकते पेड़ ऐसे लग रहे हैं, मानो वे धरती में धँस गए हैं। यहाँ कवि ने कल्पना की है कि वे धरती में इस भय से धँस गए हैं कि उनके ऊपर आसमान में छाए भयंकर बादल धरती पर टूट पड़ने को आमादा दिखते हैं, उनके नीचे दबने की आशंका से डरकर शाल के वृक्ष धरती में धँस गए हैं।

प्रश्न 12 : कवि पंत ने पर्वत की विशालता को किस प्रकार चित्रित किया है?

उत्तर : पर्वत की विशालता का वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि पर्वत मेखला के आकार का है। वह अपार है अर्थात् उसका पार पाना संभव नहीं है। उस पर खिले हुए हज़ारों फूल मानो उसकी आँखें हैं, जिनसे वह अपनी तलहटी में स्थित तालाबरूपी दर्पण में अपने विशाल आकार को निहार रहा है।

प्रश्न 13 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर लिखिए कि झरने पर्वत का गुणगान क्यों और कैसे कर रहे हैं? *(CBSE 2023)*

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में झरने अपनी नस-नस में मस्ती भरकर झर-झर की आवाज़ में पर्वत का गुणगान करते हैं। वे पर्वत का गुणगान इसलिए करते हैं, क्योंकि पर्वत ने उन्हें अपनी गोद में धारण किया है और जल का प्रवाह दिया है।

प्रश्न 14 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का यह नाम पूर्णतः सार्थक है; क्योंकि इसमें वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश में होने वाली गतिविधियों और परिवर्तनों का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। वर्षा ऋतु में पर्वतों पर फूल खिल जाते हैं, झरने बहने लगते हैं, तालाब स्वच्छ जल से भर जाते हैं। बादल अचानक ऊपर उठते हैं तो कभी एकदम पर्वतों को ढक लेते हैं और मूसलाधार वर्षा करने लगते हैं। इस प्रकार यह कविता पर्वतीय वर्षा का सजीव चित्रण करती है।

प्रश्न 15 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर लिखिए कि 'जलवयान' से क्या तात्पर्य है? उसमें कौन विराजमान है?

उत्तर : 'जलदयान' से तात्पर्य बादलरूपी वायुयान से है। इस यान में इंद्र देवता विराजमान हैं।

प्रश्न 16 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता की दो भाषागत विशेषताएँ लिखिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता की दो भाषागत विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(i) इस कविता की भाषा चित्रमयी है। कवि में चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने शब्दों के माध्यम से दृश्यों को साकार कर दिया है।

(ii) कविता में शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली का प्रयोग किया गया है। भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता है।

प्रश्न 17 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वतों की दृष्टि किसे कहा गया है? पर्वत अपना प्रतिबिंब कहाँ और क्यों निहार रहे हैं? ***(CBSE 2023)***

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वतों पर खिले सहस्रों पुष्पों को उनकी दृष्टि कहा गया है। पर्वत अपने पुष्परूपी हज़ारों नेत्रों से अपनी तलहटी में बने तालाबरूपी दर्पण में अपना प्रतिबिंब निहार रहा है। वह प्रतिबिंब इसलिए निहार रहा है, क्योंकि उसका आकार बहुत विशाल है। उसे देखकर वह गर्व की अनुभूति करता है।

प्रश्न 18 : प्रकृति का वेश किस प्रकार बदल रहा है? पंत की कविता के आधार पर लिखिए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : पंत जी की कविता 'पर्वत प्रदेश में पावस' में प्रकृति के पल-पल बदलते स्वरूप का चित्रण किया गया है। अभी जहाँ विशाल पर्वत पर हज़ारों फूल खिले थे। मोतियों की लड़ियों जैसे झागदार झरने झर-झर की आवाज़ में पर्वत का गौरवगान कर रहे थे। तालाब दर्पण जैसा साफ़-स्वच्छ लग रहा था। वृक्ष शांत खड़े होकर आकाश को ताक रहे थे। वहीं अचानक बादल उठे, उन्होंने पर्वत और वृक्षों को ढक लिया, धुआँधार वर्षा होने लगी, जिस कारण शाल के वृक्ष भी धरती में धँसे हुए-से दिखाई देने लगे, तालाब में धुआँ-सा उठने लगा। इस प्रकार पलभर में सबकुछ बदल गया।

प्रश्न 19 : 'सहस्र दृग-सुमन' से क्या तात्पर्य है? कवि ने इस पद का प्रयोग किसके लिए किया होगा? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : 'सहस्र दृग-सुमन' का तात्पर्य पर्वत पर खिले हज़ारों फूलों से है। कवि ने इन फूलों को पर्वत की आँखें कहा है। इस पद का प्रयोग कवि ने पर्वत का मानवीकरण करने के लिए किया होगा। कवि कल्पना करता है कि पर्वत अपनी फूलरूपी आँखों से अपने तल में स्थित तालाबरूपी दर्पण में अपने विशाल आकार को निहार रहा है।

प्रश्न 20 : पावस के दृश्य को कवि इंद्रजाल क्यों मानता है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : इंद्रजाल जादूगरी को कहते हैं। इसमें जादूगर पल-पल में नए-नए चमत्कार दिखाता है। पावस में भी पल-पल में प्रकृति में अद्भुत परिवर्तन होते रहते हैं। कभी घने बादल सारे पर्वत प्रदेश को ढक लेते हैं, कभी मूसलाधार वर्षा से सबकुछ अदृश्य हो जाता है, कभी पर्वत आसमान में उड़ते हुए लगते हैं और कभी तालाबों से उठती जलवाष्प से उनमें आग लगने का भ्रम होने लगता है। क्षण-क्षण होते इन परिवर्तनों के कारण ही पावस के दृश्य को इंद्रजाल कहा गया है।

प्रश्न 21 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता के आधार पर पर्वत के रूप-स्वरूप का चित्रण कीजिए। ***(CBSE 2018)***

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वत के पल-पल बदलते रूप-स्वरूप का चित्रण करते हुए कविवर पंत जी कहते हैं कि मेखलाकार पर्वत सुदूर तक विस्तृत है। वह अपनी हज़ारों पुष्परूपी आँखों से अपने चरणों में स्थित विशाल तालाबरूपी दर्पण में अपने रूप-सौंदर्य को बार-बार देख रहा है। पर्वत के ऊपर झरते हुए झाग भरे झरने उस पर लटकती मोती की लड़ियों जैसे लग रहे हैं।

प्रश्न 22 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए। ***(CBSE 2016)***

अथवा **'पर्वतीय प्रदेश में वर्षा के सौंदर्य का वर्णन 'पर्वत प्रदेश में पावस' के आधार पर अपने शब्दों में कीजिए।** ***(CBSE 2019)***

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' प्राकृतिक-सौंदर्य की कविता है। इसमें कवि ने वर्षाकाल में पर्वत प्रदेश की सुंदरता का सजीव चित्रण किया है। पर्वत करधनी के आकार का और बहुत विशाल है। उस पर हज़ारों फूल खिले हैं। उसके तल में दर्पणरूपी तालाब है। पर्वत उस तालाब में मानो अपना प्रतिबिंब निहारता है। पर्वत पर खड़े ऊँचे-ऊँचे वृक्ष आकाश को आश्चर्य से देख रहे हैं। पर्वतों पर उड़ते हुए बादल पंखों वाले पर्वत जैसे लगते हैं। वे अचानक इतनी घनघोर वर्षा करते हैं कि उसमें सबकुछ अदृश्य हो जाता है। झरने मोती की लड़ियों जैसे सुंदर हैं, वे पर्वत का गुणगान करते हुए प्रतीत होते हैं। तालाब से उठती जलवाष्प को देखकर ऐसा लगता है जैसे उसमें आग लग गई हो। वहाँ प्रकृति में पल-पल परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है। ऐसा लगता है जैसे इंद्रदेव बादलरूपी यान पर बैठकर जादू का खेल दिखा रहे हैं।

प्रश्न 23 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। मानवीकरण अलंकार के इस प्रयोग को सोदाहरण समझाइए। ***(CBSE 2015)***

उत्तर : मानवीकरण अलंकार में कवि प्रकृति की निर्जीव वस्तुओं को सजीव की तरह कार्य-कलाप करते हुए चित्रित करता है। पंत जी ने प्रस्तुत कविता में यह प्रयोग बहुत सफलतापूर्वक किया है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों से समझा जा सकता है–

(i) **पर्वत का मानवीकरण**–पर्वत अपनी पुष्परूपी आँखों से नीचे जल में अपने विशाल आकार को देख रहा है।

(ii) **झरने का मानवीकरण**–सुंदर झाग भरे झरने अपनी नस-नस में मस्ती भरकर अपनी झर-झर की आवाज़ में पर्वत का गौरवगान कर रहे हैं।

(iii) **वृक्षों का मानवीकरण**–ऊँचे-ऊँचे वृक्ष किसी चिंता में डूबे हुए हैं और एकटक दृष्टि से शांत आकाश को देख रहे हैं।

(iv) **बादल का मानवीकरण**–पर्वतरूपी बादल पारद के पंख फड़फड़ाते हुए आकाश में उड़ रहे हैं।

(v) **शाल-वृक्षों का मानवीकरण**–शाल के वृक्ष बादलों के आक्रमण से भयभीत होकर धरती में धँस गए हैं।

प्रश्न 24 : सुमित्रानंदन पंत जी कल्पना के सुकुमार कवि हैं–स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कोमल भावनाओं के कवि को सुकुमार कवि कहा जाता है। सुमित्रानंदन पंत जी को सुकुमार कवि उनकी इसी कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए ही कहा जाता है। वे प्रकृति के रौद्र और कठोर रूप का वर्णन भी कोमल कल्पना के द्वारा ही करते हैं। 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में भी उन्होंने इसी सुकुमार का परिचय दिया है। घनघोर वर्षा हो रही है, झरने भयंकर शोर कर रहे हैं। सब ओर वर्षा का प्रकोप दिखाई दे रहा है। वर्षा इतनी भयंकर है कि केवल झरनों का शोर सुनाई दे रहा है, दिख कुछ भी नहीं रहा है। लगता है बादलों के रूप में आकाश ही धरती पर

टूट पड़ा है। बादल ऐसे लग रहे हैं, मानो पहाड़ ही पंख लगाकर उड़ गए हैं। इस वर्णन में कहीं भी प्रकृति को कठोर रूप में नहीं दिखाया गया है, जबकि ऐसी घनघोर वर्षा केवल विनाश ला सकती है। मगर कवि ने कहीं भी उसका लेशमात्र भी उल्लेख नहीं किया है।

प्रश्न 25 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वत द्वारा अपना प्रतिबिंब तालाब में देखना पर्वत के किन मनोभावों को स्पष्ट करना चाहता है? ***(CBSE SQP 2021 Term-2)***

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में तालाब दर्पण का प्रतीक है। लोग दर्पण में अपना रूप देखकर प्रसन्न होते हैं। पर्वत भी तालाब रूपी दर्पण में अपना विशाल आकार देख रहा है और प्रसन्न हो रहा है।

प्रश्न 26 : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वतों को 'मेखलाकार पर्वत अपार' कहने का कवि का क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।

(CBSE 2022 Term-2)

उत्तर : 'पर्वत प्रदेश में पावस' कविता में पर्वत को 'मेखलाकार पर्वत अपार' कहने का तात्पर्य यह है कि पर्वत का आकार मेखला (करधनी) के समान है अर्थात् वह पृथ्वी की तगड़ी के समान लगता है। पर्वत बहुत ऊँचा और विस्तृत है। उसे पार करना असंभव है, इसलिए कवि ने उसे 'अपार' कहा है।

●